International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-4 July-August-2022 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

हिंदी पत्रकारिता के नए आयाम

गुड्डी बाई मीना
सहायक आचार्य
सौरभ कॉलेज ,मासलपुर करौली

सार

बढ़ती तकनीकी प्रगति के साथ, हिन्दी पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता बनाने का एक नया पहलू विकसित किया है। जिसका उपयोग पत्रकारिता में विभिन्न रुझानों का वर्णन करने के लिए किया गया है जिनमें कुछ समानताएं हैं: विभिन्न मीडिया, पेशेवर कौशल और भूमिकाओं के बीच की सीमाओं का धुंधला होना। यह विश्लेषणात्मक रूप से चार आयामों में अभिसरण की संरचना का प्रस्ताव करता है: एकीकृत उत्पादन, बहु-कुशल पेशेवर, मल्टीप्लेटफ़ॉर्म डिलीवरी और सक्रिय दर्शक। यह विश्लेषणात्मक ग्रिड नियतिवादी धारणाओं से बचते हुए अभिसरण की खोज में मदद कर सकता है मल्टीप्लेटफ़ॉर्म डिलीवरी सबसे लोकप्रिय अभिसरण रणनीति है, और किसी भी आयाम में विकास स्थापित पेशेवर दिनचर्या और मूल्यों में मौलिक परिवर्तन नहीं करता है। एकीकरण और मल्टीस्किलिंग आयाम निकटता से संबंधित प्रतीत होते हैं और मुख्य रूप से छोटे कर्मचारियों के साथ स्थानीय और क्षेत्रीय मीडिया में विकसित होते हैं। राष्ट्रीय मीडिया में वितरण और दर्शक रणनीतियाँ अधिक जटिल हैं।

मुख्य शब्द: पत्रकारिता, भारतीय राष्ट्रीयता, कंप्यूटिंग,

परिचय

हिन्दी पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता की कहानी है। हिन्दी पत्रकारिता के आदि उन्नायक जातीय चेतना, युगबोध और अपने महत् दायित्व के प्रति पूर्ण सचेत थे। कदाचित् इसलिए विदेशी सरकार की दमन-नीति का उन्हें शिकार होना पड़ा था, उसके नृशंस व्यवहार की यातना झेलनी पड़ी थी। उन्नीसवीं शताब्दी में हिन्दी गद्य-निर्माण की चेष्टा और हिन्दी-प्रचार आन्दोलन अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में भयंकर कठिनाइयों का सामना करते हुए भी कितना तेज और पुष्ट था इसका साक्ष्य 'भारतमित्र' (सन् 1878 ई, में) 'सार सुधानिधि' (सन् 1879 ई.) और 'उचित वक्ता' (सन् 1880 ई.) के जीर्ण पृष्ठों पर मुखर है।

भारत में प्रकाशित होने वाला पहला हिंदी भाषा का अखबार, उदंत मार्तंड (द राइजिंग सन), 30 मई 1826 को शुरू हुआ। इस दिन को "हिंदी पत्रकारिता दिवस" के रूप में मनाया जाता है, क्योंकि इसने हिंदी भाषा में पत्रकारिता की शुरुआत को चिह्नित किया था।

वर्तमान में हिन्दी पत्रकारिता ने अंग्रेजी पत्रकारिता के दबदबे को खत्म कर दिया है। पहले देश-विदेश में अंग्रेजी पत्रकारिता का दबदबा था लेकिन आज हिन्दी भाषा का झण्डा चहुंदिश लहरा रहा है। ३० मई को 'हिन्दी पत्रकारिता दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

पत्रकारिता

पत्रकारिता अंग्रेजी जर्नलिज्म का हिंदी अनुवाद है। जर्नल शब्द का प्रयोग पत्रिका के लिए होता है।

मैथ्यू अर्नाल्ड के अनुसार – पत्रकारिता शीघ्रता में लिखे जाने वाला साहित्य है , पत्रकार देश–विदेश की घटनाओं , समस्याओं और सूचनाओं को संकलित कर समाचार रूप में डालकर प्रस्तुत करते हैं। इसी प्रक्रिया को पत्रकारिता कहते हैं। `

पत्रकारिता के विविध आयाम

पत्रिकाएं साहित्य के विभिन्न विधाओं की जन्मदात्री रही है। राष्ट्र के सभी आंदोलनों को पत्रिकाओं ने ही सशक्त किया है। देश की आकांक्षा, विचारों और प्रेरणा की वाहिका के रूप में पत्रिकाओं ने हिंदी को राष्ट्रवादी स्वरूप प्रदान किया। हिंदी के गद्य काल में ही निबंध जीवनी आत्मकथा यात्रा वृतांत गद्य गीत संस्मरण, रेखा चित्र रिपोतार्ज, डायरी आलोचना, समालोचना, समीक्षा, भेटवार्ता पत्र साहित्य आदि विधाएं पल्लवित और पुष्पित हुई, जिनके उनायक पत्रकार ही थे जो बाद में उत्कृष्ट साहित्यकार भी हुए। भारतीय जनता की विचार अभिव्यक्ति बौदधिक विकास, सुदृढ व्यवस्थित तथा परिमार्जित भाषा का निर्माण एवं समृद्ध साहित्य का सृजन पत्रकारों ने ही किया । "कवि वचन सुधा और सरस्वती ने हिंदी जगत की जो सेवा की वह स्वर्ण अक्षरों में उल्लेखनीय है। भारतेंदु एवं द्विवेदी सदृश पत्रकार यदि ना होते तो बालकृष्णभट्ट प्रताप नारायण मिश्र, बाबूराव विष्णुपराडकर, शिवपूजन सहाय, प्रेमचंद, निराला, पंडित, नाथूराम शंकर मैथिलीशरण गुप्त गोपाल शरण सिंह मुकुटधर पांडे वृंदावनलालवर्मा पद्मश्रीशर्मा राहुलसांस्कृतआयन, भगवतशरण उपाध्याय कन्हैयालाल मिश्र जैसे सैकड़ों साहित्यकार हिंदी जगत को नहीं मिल पाते। सच तो यह है समस्त विधाओं को गतिशील बनाने का उत्तरदायित्व पत्रकारों ने हीं निभाया है। श्री हेरंब मिश्र के अनुसार–

"सर्वोत्तम पत्रकारिता साहित्य है और सर्वोत्तम साहित्य पत्रकारिता है "।

वस्तुतः जनता में साहित्यिक चेतना जगाने का श्रेय एवं युगीन भाव बोध के साथ भाषा का आंदोलन पत्रकारिता से ही प्रारंभ हुआ। भाषा के आदर्श रूप को स्थिर करने एवं लोक रुचि का परिष्कार करने में साहित्यिक पत्रों का महत्वपूर्ण योगदान है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा कि जिस प्यारी हिंदी को देश ने अपनी विभूति समझा, जिसको जनता ने उत्कंठा पूर्वक दौड़कर अपनाया उसका दर्शन हरिश्चंद्र चंद्रिका में ही किया जा सकता है।

उद्देश्य

1. हिंदी पत्रकारिता के नये आयामों का अध्ययन
2. पत्रकारिता अभिव्यक्ति एवं माध्यम के विविध आयामों का अध्ययन करना

साहित्य और साहित्यिक पत्रकारिता में थीम का महत्वपूर्ण होना स्वयं में समस्यामूलक है।हिन्दी की अनेक साहित्यिक पत्रिकाओं ने फासीवाद, प्रेम,बेबफाई साम्प्रदायिकता, आतंकवाद,भूमंडलीकरण आदि पर विशेषांक निकाले हैं। इन सभी विशेषांकों का एक ही साझा संदेश है कि हम विषय के बारे में, अपने बारे में कितना जानते हैं। इससे थीम केन्द्र में आई है और व्यक्ति का स्थानान्तरण हुआ है।थीम के हिमायती भूल गए हैं कि साहित्य का थीम के आधार पर प्रसार नहीं होता। इससे अनुकरण,पैरोडी और साहित्यानुकरण होता है। एक पत्रिका ने युवा रचनाकार विशेषांक निकाला तो बाकी पत्रिकाएं अनुकरण करके युवा लेखन पर विशेषांक निकाल रही हैं। किसी ने स्त्री या दलित पर विशेषांक निकाला तो बाकी पत्रिकाएं उससे बेहतर विशेषांक निकाल रही हैं। इस विशेषांक संस्कृति ने थीम को प्रतिष्ठित किया है विषय और व्यक्ति को अपदस्थ किया है। साहित्य में इस बहाने व्यक्ति का बहिष्कार हुआ है। विषय का अंत हुआ है।

पहले साहित्य और साहित्यिक पत्रिकाओं में लेखक के विज़डम और मासकल्चर के रूपों पर जोर था। इन दिनों साहित्य में आकर्षक,इकसार और रूढ़िबद्ध विषयों का महिमामंडन चल रहा है। मसलन् यदि किसी दलित ने एक खास अंदाज में अपनी आत्मकथा में कुछ खास पक्षों को उठाया है तो हठात् दलित आत्मकथाओं में मिलते -जुलते चित्रों की बाढ़ आ गयी है। दलित और स्त्री आत्मकथाओं में एक खास किस्म का अंधानुकरण साफतौर पर देख सकते हैं। एक जमाना था साहित्य में विषय की विशिष्टता थी। विशिष्टता की जगह इन दिनों अंधानुकरण हो रहा है। विषय से लेकर समस्या के ट्रीटमेंट तक इकसारता के कारण साहित्य से व्यक्ति की विदाई और विशिष्टता का अंत हो गया है। पहले पाठ का संबंध ऑब्जेक्ट के साथ था इन दिनों ऑब्जेक्ट की जगह फैशन ने ले ली है। थीम ने ले ली है। इन दिनों साहित्य थीम से थीम की ओर बढ़ रहा है। थीम से पैदा होने वाला साहित्य स्टीरियोटाईप और बोगस होता है चाहे उसे कितने ही बड़े लेखक ने लिखा हो। साहित्य का आधार अब जीवन नहीं थीम है और यही वह बिंदु है जहां साहित्य का अंत हो जाता है। दूसरी प्रवृत्ति निर्धारणवाद की है। इसमें स्त्री,युवा,दलित आदि को निर्धारणवादी ढ़ंग से पेश किया जा रहा है। अब कोई भी रचना मर्दवाद के आतंक-उत्पीड़न, वर्णाश्रम व्यवस्था के उत्पीड़न ,भूमंडलीकरण के उत्पीड़न के बिना नहीं लिखी जा रही।

राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन में इसकी अहम भूमिका है। इसका सबसे प्रमुख सिद्धांत है निष्पक्ष होकर न्याय का साथ देना ।

पत्रकारिता का इतिहास बेशक पुराना है परंतु 21वीं शताब्दी में इसका क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया, जिसमें आवश्यक विविधतायें भी समाहित हो गई। उल्लेखनीय है कि आज का जीवन विविधताओं से भरा है और जित्य नूतन साधनों की प्रचुरता के कारण पत्रकारिता बहुआयामी बन चुकी है। आज पत्रकार अपनी रुचि एवं प्रवृत्ति के अनुरूप अपने लिए विशेष क्षेत्रों का चयन कर रहे हैं क्योंकि आज का युग स्पेशलाइजेशन का युग है जिसमें क्षेत्र विशेष का अलग अलग महत्व है। अतः पत्रकारिता के विविध आयामों की आवश्यकता महसूस किया जाना स्वाभाविक है। पत्रकारिता के निम्नांकित आयामों का संक्षिप्त विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है-

1. व्याख्यात्मक पत्रकारिता

किसी भी समाचार का विश्लेषण उसकी पृष्ठभूमि तथा उसके भावी परिणामों का दिशा निर्देश करने की समस्या का निदान व्याख्यात्मक पत्रकारिता के द्वारा होता है। समाचारों के यथार्थ परिवेश और उनके सत्यापन का मूल्यांकन करना ही इस पत्रकारिता का लक्ष्य है। दुतगामी संचार साधनों से प्राप्त समाचारों विकास पत्रकारिता के विस्तार और उसके स्पष्टीकरण के लिए व्याख्यात्मक पत्रकारिता ही श्रेष्ठ हैं।

2. विकास पत्रकारिता

इस पत्रकारिता के अंतर्गत सरकारी, गैर सरकारी विभिन्न योजनाओं, विकास कार्यक्रमों तकनीकी अभिवृद्धि आदि समाहित है लेकिनमूलतः यहसामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक प्राविधिक संबंधी समय विकास के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालती है, जिसके अंतर्गत कभी-कभी सनसनीखेज, योजनाओं की गड़बड़ी और भारी-भरकम गोलमाल भी आ जाते हैं। इसमें भ्रष्टाचार और गबन के मामले भी शामिल हैं। केंद्र और प्रांतीय सरकारें अपने विकास कार्यक्रमों को जनता तक पहुंचाने के लिए इसी पत्रकारिता का सहारा लेती हैं।

3. आर्थिक पत्रकारिता

आज जीवन का प्रत्येक क्षेत्र अर्थ से प्रभावित होकर ही संचालित है। पूरी दुनिया अर्थ उपार्जन के पीछे चल रही है। इसी कालरण अर्थ से संबंधित समस्त क्रियाकलापों को उजागर करने के लिए आर्थिक पत्रकारिता विकसित की

गई है। मुद्रा बाजार पूंजी बाजार, वस्तु बाजार, बँक पंचवर्षीय योजनाएं, ग्राम उद्योग श्रम बजट और राष्ट्रीय आय के तमाम समाचार पाठकों के लिए आज आकर्षक एवं महत्वपूर्ण बन गए हैं।

द इकोनोमिक टाइम्स दैनिक अकोला बाजार व्यापार भारती फाइनेंशियल एक्सप्रेस जैसे महत्वपूर्ण पत्रों के द्वारा केवल उद्योग और व्यवसाय की जानकारी दी जा रही है। अर्थशास्त्र, वाणिज्य और तकनीकी ज्ञान वाले इस पत्रकारिता से लाभ उठा रहे हैं अतः इस प्रकार की पत्रकारिता की विशेष महत्व को समझा जा सकता है।

4. खेल पत्रकारिता

राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय राज्य स्तरीय क्षेत्रीय खेलों का चल संवाद या संवाद का निष्पक्ष समीक्षात्मक विश्लेषण ही खेल पत्रकारिता है। आज सभी पत्रों में दैनिकों में खेल समाचारों का अलग कॉलम होता है. जिसमें विभिन्न खेलों से संबंधित सूचनाएं निर्गत की जाती है। ये सूचनाएं दो प्रकार से अग्रिम (एडवांस) और चल (रनिंग इन दोनों ही प्रकार के संवादों में लिखी जाती हैं । अमुक खेल में शामिल होने वाली टीमें खिलाड़ियों के नाम खेल व्यवस्था एवं खेल विशेष की पृष्ठभूमि के सहारे अग्रिम संवाद की रचना की जाती है। एक योग्य खेल संपादक या लेखक तथ्यों, टिप्पणियों अलंकारिक युक्तियों आदि को आकर्षक शैली में प्रस्तुत कर अपने समाचार को प्रभावशाली बना सकता है। क्रिकेट सम्राट खेल- खिलाड़ी, स्पोर्टस वीक, खेल युग आदि पत्रिकाओं ने खेल पत्रकारिता की जगत को आगे बढ़ाया

5. ग्रामीण पत्रकारिता

हमें ज्ञात है कि भारत गांवों का देश है परंतु अनेकों प्रयास के बाद गांव अभी भी पिछड़े हैं। अतः गांव में नवीन चेतना और वैज्ञानिक विकास के स्वरों को पत्रकारिता द्वारा ही पहुंचाया जाता है। परंपरागत लोक कला, कृषि उद्योग. लोक संस्कृति के प्रचार, कुटीर उद्योग ग्रामीण स्वास्थ्य हरित और श्वेत क्रांति गांवों के समय विकास के लिए पत्रकारिता एक सहायक की तरह कार्य करती है। श्री गणेश शंकर विद्यार्थी ने कहा है कि- राष्ट्र का मंगल और उसकी जड़े उस समय तक मजबूत नहीं हो सकती जब तक के अनगिनत लहलहाते पौधों की जड़ों को जीवन के जल से सींचा नहीं जाता।" इस दृष्टि से ग्रामीण पत्रकारिता के महत्व को आंका जा सकता है।

पत्रकारिता का महत्व

देश विदेश की गतिविधियों की जानकारी देती है।

- जन सामान्य को उसके कर्तव्य और अधिकारों की जानकारी देती है।
- रोजगार के अवसर तलाशने में सहायक है।
- राष्ट्रीय चेतना का सशक्त आधार है।
- युगीन समस्याओं से जनता को जोड़ती है।
- मानव कल्याण की प्रेरणा देती है।

भारत में पत्रकारिता का उद्भव और विकास

भारत में समाचार पत्रों का प्रारम्भ कलकत्ता से माना जाता है। इसके दो कारण थे- पहला- सन् 1755 में कलकत्ता में छपाई का प्रारम्भ होना, दूसरा- सन् 1777 में 'जेम्स' आगस्टन हिकी' द्वारा कलकत्ता जेल के ऋणों हेतु प्रेस की स्थापना करना । "29 जनवरी सन् 1780 को 'जेम्स हिकी' ने 'बंगाल गजट' या 'केलकटटा जनरल एडवरटाइज़र' नामक पत्र की शुरूआत कर भरतीय पत्रकारिता की नींव रखी। 8 जिसमें जॉन कम्पनी के प्रशासन और भारत में बसे तत्कालीन अंग्रेज़ महाप्रभुओं की भ्रष्टता का पर्दाफाश हिकी द्वारा किया गया। 12 इंच

लम्बा, 8 इंच चौड़ा और दोनों ओर तीन कॉलमों की छपाई वाला दो पृष्ठों का मामूली सा पत्र था- 'बंगाल गजट' । अनेक कमियों और अतिरेक भरे लेखन के बाद भी यह मानना होगा कि भारत में प्रेस को जन्म देने का श्रेय 'हिकी' को ही है। 'बंगाल गज़ट' की प्रतियां कलकत्ता की नेशनल लाइब्रेरी में उपलब्ध है।

दूसरा पत्र 'पीटर रीड' का 'इंडियन गज़ट' है जो सन् 1780 में निकला। इसमें ईस्ट इंडिया कम्पनी की व्यापारिक गतिविधियों संबंधी सूचनाएँ छपा करती थीं। यह पत्र लगातार 50 वर्षों तक छपता रहा और कभी भी सरकार के विरूद्ध नहीं गया। मद्रास में सन् 1785से 'मेडरॉस करियर' और बम्बई में सन् 1789 से 'बाम्बे हेराल्ड' से पत्रकारिता का श्री गणेश हुआ ।

निष्कर्ष

बदलते वैश्विक परिवेश में पत्रकारिता के लिए तकनीक एक बड़ी चुनौती है। भारत जैसा देश जहां की 60 प्रतिशत जनसंख्या युवाओं की है जो कि टेक्नोसेवी बन रही है । जिसने स्मार्टफोन और लैपटॉप को अपना दोस्त मान लिया है। ऐसे में समाचार पत्रों के प्रिंट सस्करणों के समक्ष चुनौतियां उपज रही हैं। न्यू मीडिया की त्वरित प्रतिपुष्टि हो या ग्लोबल विलेज की संरचना या फिर सोशल नेटवर्किंग का जाल सभी पहलु समाचार पत्रों के प्रिंट संस्करणों के समक्ष इसकी प्रासंगिकता को लेकर तमाम अटकले पेश कर रहे हैं।

संदर्भ -

1. पत्रकारिता संदर्भ कोश डॉ. रामप्रकाश एवं डॉ सुधीन्द्र कुमार, वाणी : प्रकाशन, नयी दिल्ली, सन् 2022 पृ. सं. 52
2. हिन्दी पत्रकारिता : कृष्ण बिहारी मिश्र, भरतीय ज्ञानपीठ, सन् 2022 ई. पृ. 70 संपादन कला एवं प्रूफ पठन डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, सन् 2020, पृ. 121
3. हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम, डॉ वेद प्रताप वैदिक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2020 पृ. 29
4. हिन्दी पत्रकारिता और गद्य शैली का विकास : डॉ. गंगानारायण त्रिपाठी, शांति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2021 ई., पृ. 10
5. पत्रकारिता एवं प्रेस विधि : डॉ. बंसती लाल बावेल, सुविधा लॉ हाउस, भोपाल, 2016, पृ. 03
6. हिन्दी पत्रकारिता का विकास : एन. सी. पंत राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली सन् 2014, पृ. 22
7. प्रकाशन प्रभाग, भारत: एक संदर्भ वार्षिक, (नई दिल्ली: सूचना और प्रसारण मंत्रालय। भारत सरकार, 2019), पी। 130.
8. प्रेस इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया सर्वे, 'भारत के समाचार पत्र कहां बिकते हैं', उइदुरा, 6:1, मई, 2019।
9. के.पी. नारायणन, 'द फ्यूचर ऑफ इंडियन जर्नलिज्म', रोलैंड ई. वोल्स्ले (सं.), जर्नलिज्म इन मॉडर्न इंडिया (बॉम्बे: एशिया पब्लिशिंग हाउस, 2023), पी. 260. वही, पृ. 259.
10. राम रतन भटनागर, द राइज़ एंड ग्रोथ ऑफ़ हिंदी जर्नलिज्म (अल्ला हबद: किताब महल, 2017) देखें।
11. जे. नटराजन, भारतीय पत्रकारिता का इतिहास (नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग। भारत सरकार, 2014), पी। 184.
12. मार्गरीटा बार्न्स, द इंडियन प्रेस (लंदन: जी. एलन और अनविन, 2020) पी. 336.

13. लक्ष्मी नारायण, 'एक पत्रकार के रूप में महात्मा गांधी', पत्रकारिता त्रैमासिक 42:267, वसंत, 1965।
14. एच. एस. डिल्गर, 'टू सेंचुरीज़ ऑफ स्ट्रगल: प्रेस विंस फ्रीडम इन इंडिया', (अप्रकाशित मास्टर थीसिस, बोस्टन यूनिवर्सिटी, बोस्टन, 1963), पी। 50.
15. एडविन हिर्शमैन, 'द प्रॉब्लम्स ऑफ द प्रेस इन ए मल्टीलिंगुअल सिटी', (अनप्रकाशित शोध पत्र, 1965), पी. 8.